Dev Ganesha
ज्ञान के समुद्र महामुनि पराशर
को कोटि कोटि नमन्
रुद्राक्ष धारे, सब अङ्गों में विभूति लगाए,
भस्म का त्रिपुण्ड्र मस्तक में दिये, जटाधारे,
श्वेत यग्योपवीत पहिने, वल्कल वस्त्र (वृक्ष छाल)
ओढ़े महामुनि पराशर
- स्कन्दपुराण, ब्रह्म खण्ड (१२)

महामति योगीश्वर पराशर
©मेरुशृंग
विप्रा जटावल्कलसंवृतः भस्मोद्धूलितसर्वांगस्त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकः।
रुद्राक्षमालाभरणः सितयज्ञोपवीतवान् पराशरोनाम मुनिराजगाम ॥५९॥
अर्थात - मुनियों में श्रेष्ठ पराशर सिर पर जटाजूट एवं शरीर पर वल्कल वस्त्र धारण किये हुए थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म लगा रखी थी। उनके मस्तक पर त्रिपुण्ड्र का निशान चमक रहा था। वे (गले में) रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए, पवित्र श्वेत यग्योपवीत् से सुशोभित हो रहे थे।
- स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड ३

राजपुत्र
प्रधानपुत्र
भद्रसेन राजा
प्रधान

तस्यान्वपे चापि ततो महर्षिः पराशरो नाम महाप्रभावः।
पिता स ते वेदनिधिर्वरिष्ठो महातपा वै तपसो निवासः ॥५०॥

अर्थात - उन्हीं ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के वंश में पराशर नाम वाले महान् प्रभावशाली महर्षि होंगे। वे वैदिक ज्ञान के भण्डार, मुनियों में श्रेष्ठ, महान् तपस्वी एवं तपस्या के आवास स्थान होंगे। वे ही पराशर मुनि उस समय तुम्हारे पिता होंगे।

- महाभारत, शान्ति पर्व, मोक्षधर्म पर्व, अध्याय - ३४९

मुनिश्रेष्ठ पराशर
@मेरुश्रृंग
विप्रा जटावल्कलसंवृतः भस्मोद्धूलितसर्वांगस्त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकः।
रुद्राक्षमालाभरणः सितयज्ञोपवीतवान् पराशरोनाम मुनिराजगाम ॥५९॥
अर्थात - मुनियों में श्रेष्ठ पराशर सिर पर जटाजूट एवं शरीर पर वल्कल वस्त्र धारण किये हुए थे। उन्होंने अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म लगा रखी थी। उनके मस्तक पर त्रिपुण्ड्र का निशान चमक रहा था। वे (गले में) रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए, पवित्र श्वेत यग्योपवीत् से सुशोभित हो रहे थे।
- स्कन्द पुराण, ब्रह्म खण्ड-३, सेतु महात्म्य, अध्याय-१२

■ ब्रह्मर्षि पराशर की जन्म तिथि - आश्विन मास की शरद् पूर्णिमा अर्थात आश्विन मास की शुक्ल पूर्णिमा

◆ विस्तृत व्याख्या -

★ पराशर जी की जन्मतिथि के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। निर्णय सागर पंचाङ्ग नीमच, संवत् २०५७ में वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ब्रह्मर्षि पराशर की जन्मतिथि बताया गया है। इस पंचाङ्ग में पराशर को 'पाराशर' संभवतया भूलवश लिख दिया गया है। अथवा मुद्रण की अशुद्धि है, क्योंकि पंचाङ्ग का आशय पराशर पुत्र पाराशर (व्यास) होता तो व्यासपीठ पूजन एवं गुरु पूर्णिमा का उल्लेख आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के रूप में नहीं किया जाता।

★ महर्षि वसिष्ठ द्वारा देहपात के जो प्रयास किये गए तथा जिनका प्रसङ्ग महाभारत में आया है, उनका विवेचन करने पर पराशर के जन्म के सम्बंध में निश्चित तिथि ज्ञात करने में वे प्रसङ्ग सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

★ महर्षि वसिष्ठ द्वारा आत्मघात के प्रयत्न तथा उस समय के वातावरण (मौसम) आदि का यदि तथ्यपरक विवेचन किया जाये, तो यह तथ्य सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि पराशर का जन्म आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था न कि वैशाख शुक्ल प्रतिपदा अथवा आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को।

★ महाभारत के आदि पर्व के १७५ वें अध्याय के श्लोक संख्या ४५-४९ और १७६ वें अध्याय के श्लोक संख्या १-१० का गहन अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित बातें पता चलती हैं -

■ आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा - अर्थात गुरु पूर्णिमा ग्रीष्म ऋतु के अन्त में आती है। पुत्र शोक से व्याकुल ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के जीवन समाप्त करने के उद्देश्य से महावन के भीतर धधकते हुए दावानल में प्रवेश करने का उल्लेख महाभारत के आदि पर्व के १७५ वें अध्याय के श्लोक संख्या ४६-४७ में मिलता है।

स मेरुकूटादात्मानं मुमोच भगवानृषिः।

गिरेस्तस्य शिलायां तु तूलराशाविवापतत् ॥४५॥

अर्थात - महर्षि भगवान वसिष्ठ ने मेरु पर्वत के शिखर से अपने-आप को उसी पर्वत की शिला पर गिराया; परन्तु उन्हें ऐसा जान पड़ा मानों वे रुई के ढ़ेर पर गिरे हों। ॥४५॥

न ममार च पातेन स यदा तेन पाण्डव।

तदाग्निमिद्धं भगवान् संविवेश महावने ॥४६॥

#अर्थात - जब (इस प्रकार) गिरने से भी नहीं मरे, तब वे भगवान वसिष्ठ महान् वन के भीतर धधकते हुए दावानल में घुस गये। ॥४६॥

तं तदा सुसमिद्धोऽपि न ददाह हुताशनः।

दीप्यमानोऽप्यमित्रघ्न शीतोऽग्निरभवत्ततः ॥४७॥

#अर्थात - यद्यपि उस समय अग्नि प्रचण्ड वेग से प्रज्ज्वलित हो रही थी, तो भी उन्हें जला न सकी। शत्रुसुदन अर्जुन, उनके प्रभाव से वह दहकती हुई आग भी शीतल हो गयी। ॥४७॥

★ सामान्य बुद्धि के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जंगल में आग (दावानल) प्रायः गर्मी में ही लगती है। इसी प्रकार, ब्रह्मर्षि के वर्षा के नूतन जल से लबालब भरी हुई नदी में कूदने का उल्लेख महाभारत के आदि पर्व के १७६ वें अध्याय के श्लोक संख्या १-३ में मिलता है तथा यह काल वर्षा काल का था।

ततो दृष्ट्वाऽऽश्रमपदं रहितं तै सुतैर्मुनिः।

निर्जगाम सुदुःखार्तः पुनरप्याश्रमात् ततः ॥१॥

#अर्थात - कुन्तीनन्दन, वर्षा का समय था, उन्होंने देखा, एक नदी नूतन जल से लबालब भरी है और तटवर्ती बहुत से वृक्षों को अपने जल की धारा में बहाये लिये जाती है। ॥१॥

सोऽपश्यत् सरितं पूर्णां प्रावृट्काले नवाम्भसा।

वृक्षान् बहुविधान् पार्थ हरन्तीं तीरजान् बहून् ॥२॥

#अर्थात - कौरवनन्दन (उसे देखकर) दुःख से युक्त वसिष्ठ जी के मन में फिर यह विचार आया की मैं इस नदी के जल में डूब जाऊँ। ॥२॥

अथ चिन्तां समापेदे पुनः कौरवनन्दन।

अम्भस्यस्या निमज्जेयमिति दुःख समन्वितः ॥३॥

#अर्थात - तब अत्यन्त दुःखी हुए महामुनि वसिष्ठ अपने शरीर को पाशों द्वारा अच्छी तरह बाँधकर उस महानदी के जल में कूद पड़े। ॥३॥

★ महर्षि वसिष्ठ द्वारा आत्मघात के प्रयत्नों में पर्वत से गिरने, वनाग्नि में अपने को भस्मीभूत करने, समुद्र में डूब मरने व दो बार नदी प्रवाह में डूबने का प्रयत्न किया गया, पर वे असफल रहे।

★ इससे यह सिद्ध होता है कि ग्रीष्म एवं वर्षा काल में ब्रह्मर्षि वसिष्ठ पुत्र शोक तथा वंश लोप होने के कष्ट की ज्वाला में जल रहे थे। इस समय उनके द्वारा शरीर-त्याग का प्रयास यह सिद्ध करता है कि महर्षि पराशर ने उस समय तक जन्म नहीं लिया था अथवा वसिष्ठ जी को पराशर के गर्भस्थ होने की जानकारी नहीं थी। अतः उक्त जन्म-तिथि उचित प्रतीत नहीं होती।

■ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा - यह तिथि बसंत ऋतु में आती है। वर्षा ऋतु तथा बसंत में करीब ७ माह का अन्तर है, जो काफी लम्बा समय है।

■ आश्विन शुक्ल पूर्णिमा - अर्थात शरद् पूर्णिमा। यह तिथि शरद् ऋतु में आती है, जो वर्षा ऋतु के ठीक पश्चात का समय है। पुत्र शोक से व्याकुल ब्रह्मर्षि ने ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में प्राण-त्याग का प्रयास किया, पर वे असफल रहे। इसी समय अपनी पुत्रवधु के गर्भ में स्थित पराशर से उन्होंने वेद-ध्वनि सुनी एवं वे अपने आश्रम लौट आये। तदनन्तर पराशर-जन्म का उल्लेख महाभारत में मिलता है। यहीं तिथि पराशर जयंती के रूप में तर्कसंगत लगती है।

★ इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर आश्विन शुक्ल पूर्णिमा अर्थात शरद् पूर्णिमा ही महर्षि पराशर की जन्म तिथि के रूप में सही प्रतीत होती है।

👉 इसके अतिरिक्त श्री रामानन्द सम्प्रदाय के प्रकाशित ग्रन्थ ' श्री रामानन्द सम्प्रदाय का इतिहास' के अनुसार महर्षि पराशर का जन्म आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को वसिष्ठाश्रम में होना बताया गया है।

👉 आचार्यसम्राट् आनन्दभाष्यकार श्री रामानन्द जी द्वारा प्रणीत 'वैष्णवमताब्ज भास्करः' (संस्कृत) ग्रन्थ में भी महर्षि पराशर के प्राकट्य दिवस की तिथि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा ही बतायी गयी है। (स्क्रीनशॉट संलग्न है।) आचार्य रामानन्द ने वसिष्ठ, पराशर, वेदव्यास और शुकदेव की जन्म तिथियाँ इस प्रकार बतायीं हैं -

● वसिष्ठ - भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी (ऋषि पञ्चमी), ब्रह्मलोक में ब्रह्मा जी के मानस पुत्र के रूप में प्राकट्य हुआ। कालान्तर में राजा निमि के शाप के कारण विदेह हो जाने पर मित्रावरूण तथा उवर्शी के पुत्र रूप में अवतरित हुए।

● पराशर - आश्विन शुक्ल पूर्णिमा, वसिष्ठ काल में अदृश्यन्ती के गर्भ से गङ्गावर्त नामक स्थान पर नैमिषारण्य में जन्म हुआ।

● कृष्णद्वैपायन वेदव्यास - आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा), पराशर काल में सत्यवती के गर्भ से यमुना नदी के तट पर कालपी में जन्म हुआ।

● शुकदेव - श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, व्यासकाल में अरणी के गर्भ से मेरूशृंग पर जन्म हुआ।

👉 इसी प्रकार 'भारती' संस्कृत मासिक पत्रिका के 'रामानन्द दर्शन' विशेषाङ्क मई १९९९ पृष्ठ संख्या १९ में भी महर्षि पराशर का आविर्भाव आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को ही बताया गया है।

रामानन्द सम्प्रदाय का उपर्युक्त ग्रन्थ महर्षि पराशर की जन्मतिथि के निर्धारण के सन्दर्भ में प्रामाणिक ग्रन्थ माना जा सकता है।

#नोट -

★ जगद्गुरु श्री रामानंदाचार्य जी तीर्थराज प्रयाग में १३५६ वि०सं० में अति समृद्ध वसिष्ठ गोत्रीय तीन प्रवर वाले शुक्लयजुर्वेदीय वाजसनेय शाखाध्यायी कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में अवतरित हुए। इनके पिता का नाम पण्डित श्री पुण्यसदन शर्मा जी तथा माता जी का नाम श्रीमती सुशीला देवी था। इनका जन्मतः नाम 'रामानन्द' था। 'रामानन्दः स्वयं 'रामः प्रादुर्भूतो महीतले' इस आगम प्रमाण्य से मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामजी के अवतार होने से प्रारम्भ से ही ये सर्वजनों के आकर्षण के केन्द्र बने थे।

★ उनके उपशिष्यों में रामचरितमानस की रचना करने वाले गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, श्री कृष्णदासपयोहारी जी महाराज, श्री अग्रदास जी, श्री नाभास्वमी जी एवं साक्षात भक्तिस्वरूपा श्री मीरा जी हैं।